अपठित बोध

अपठित काव्यांश :- वह काव्यांश, जो हमारी पाठ्य पुस्तक में नहीं है, उन्हें अपठित काव्यांश कहते हैं। अपठित काव्यांश के द्वारा विद्यार्थी की भावग्रहण करने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।

प्रश्न पत्र :- प्रश्न पत्र में 100 से 150 शब्दों का काव्यांश होगा और काव्यांश से संबंधित चार अंक के चार प्रश्न पूछे जायेंगे।

प्रश्न पत्र हल करने की विधि :-

1. काव्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।
2. एक बार में अगर काव्यांश समझ नहीं आए तो उसे एक बार फिर पढ़ें।
3. काव्यांश के प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें।
4. प्रश्न के उत्तर से संबंधित पंक्तियों को चुनिए।
5. अपठित काव्यांश में कई सांकेतिक शब्द होते हैं, उन्हें समझना जरूरी है।
6. सांकेतिक शब्द कविता के भाव से जुड़े होते हैं। कविता के भाव को समझें।
7. प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सहज, सरल भाषा में होने चाहिए।
8. प्रतीकात्मक और लाक्षणिक शब्दों का भाव पंक्ति के द्वारा समझाएँ, जिससे भाव स्पष्ट हो जाये।

VASUNDHARAHINDI.COM

(।)

खुल कर चलते डर लगता है

बातें करते डर लगता है

क्योंकि शहर बेहद छोटा है।

ऊँचे हैं लेकिन खजूर से

मुँह है इसलिए कहते हैं

जहाँ बुराई फूले-पनपे

वहाँ तटस्थ बने रहते हैं

नियम और सिद्धांत बहुत

दंगों से परिभाषित होते हैं –

जो कहने की बात नहीं है

वही यहाँ दुहराई जाती

जिनके उजले हाथ नहीं हैं

उनकी महिमा गाई जाती

यहाँ ज्ञान पर, प्रतिभा पर

अवसर का अंकुश बहुत कड़ा है-

सब अपने धंधे में रत हैं

यहाँ न्याय की बात गलत है

क्योंकि शहर बहुत छोटा है।

बुद्धि यहाँ पानी भरती है

सीधापन भूखों मरता है

उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है

जो सारे काम गलत करता है

VASUNDHARAHINDI.COM

यहाँ मान के नाप-तौल की

इकाई कंचन है, धन है –

कोई सच के नहीं साथ है

यहाँ भलाई बुरी बात है

क्योंकि शहर बहुत छोटा है।

(CBSE 2013)

प्रश्न 1) कवि शहर को छोटा कहकर किस "छोटेपन" को अभिव्यक्त करना चाहते हैं?

उत्तर : कवि का कहना है शहर के लोगों की प्रवृत्ति बहुत तुच्छ है। वो लोग गलत और अन्याय का साथ देते हैं तथा सच का साथ नहीं देते।

प्रश्न 2) इस शहर के लोगों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर : इस शहर के लोगों की मुख्य विशेषताएँ ये हैं – बिना कारण ये लोग बोलते हैं, ये बुराई को देखकर तटस्थ रहते हैं, सिद्धांत और नियम दंगों के लिये हैं, न कहने योग्य बातों की दुहाई दी जाती है, गलत काम करने वालों का यश गाया जाता है, ज्ञान और प्रतिभा को अवसर नहीं दिया जाता, न्याय को गलत कहा जाता है, बुद्धिमान और सीधे सादे को कोई नहीं पूछता, गलत काम करने वाले को सम्मान दिया जाता है, धनवान सम्मान का पात्र है।

प्रश्न 3) आशय समझाइए – बुद्धि यहाँ पानी भरती है,

सीधापन भूखों मरता है –

उत्तर: बुद्धिमान व्यक्ति को कोई नहीं पूछता तथा सीधे सादे व्यक्ति को खाने के लिए नहीं मिलता।

प्रश्न 4) इस शहर में असामाजिक तत्व और धनिक क्या-क्या प्राप्त करते हैं?

उत्तर : इस शहर में असामाजिक तत्व और धनिक व्यक्ति प्रतिष्ठा और मान-सम्मान पाता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

(II)

तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का

चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।

विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता

जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरन्तर नाता।

पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय

जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिनत ज्वार साथ लय।

अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में

सहनशीलता दृढता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।

वही पथ बाधा को तोड़ बहते हैं जैसे हो निर्झर

प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चल कर।

(CBSE 2014)

प्रश्न 1) कवि ने किस का आह्वान किया है और क्यों?

उत्तर : कवि ने तरुणाई (यौवन/युवावस्था) का आह्वान किया है। क्योंकि युवा बाधाओं से टकरा कर प्रगति करते हैं और लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 2) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तर : तरुण (युवा) बाधाओं से टक्कर लेते हैं, निरन्तर उत्साह से गतिशील रहते हैं, अनगिनत बाधाओं से जूझते हैं, सहनशील और दृण होते हैं, दुर्गम राहों पर चल कर प्रगति करते हैं।

प्रश्न 3) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?

उत्तर : नवयुवक मार्ग की रुकावटों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार जैसे झरने दुर्गम पथ पर सब रुकावटों को तोड़ कर प्रगति पथ पर चलते रहते हैं।

प्रश्न 4) आशय स्पष्ट करो – "जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिनत ज्वार साथ लय।"

उत्तर : युवाओं के साहस के आगे बड़ी-बड़ी बाधाएँ भी नष्ट हो जाती हैं, जैसे सागर में उठने वाली ज्वार की लहरें भी सागर के साहस के आगे टिक नहीं सकती व सागर में ही विलीन हो जाती हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

(III)

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

नेह का आह्वान फिर-फिर

वह उठी आँधी कि नभ में

छा गया सहसा अँधेरा

धूल-धूसर बादलों ने

भूमि को इस भाँति घेरा

रात-सा दिन हो गया फिर

रात आई और काली

लग रहा था अब न होगा

इस निशा का फिर सवेरा

रात के उत्पाद-भय से

भीत जन-जन, भीत कण-कण

किंतु प्राची से उषा की

मोहिनी मुस्कान फिर-फिर

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

नेह का आह्वान फिर-फिर

(CBSE 2015)

प्रश्न 1) आँधी और बादल किसके प्रतीक हैं? इसके क्या परिणाम होते हैं?

उत्तर : आँधी और बादल संकटों और आपदाओं के प्रतीक हैं। संकटों और आपदाओं से मन निराश हो जाता है। लगता है कि इन दुखों का अंत कभी नहीं होगा।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 2) कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है?

उत्तर : कवि आशावादी है। उनका सोचना है कि कितने ही संकट, आपदाएँ और दुख क्यों न हों, एक दिन इनका अंत होगा, फिर निर्माण होगा।

प्रश्न 3) कवि किस बात से भयभीत है और क्यों?

उत्तर : कवि का कहना है कि आँधी, रात-रूपी आपदाएं, संकट और दुखों ने हमें घेर लिया है। आशा की किरण कहीं दिखाई नहीं दे रही। इसलिए कवि को भय है कि क्या कभी इन सब का अंत नहीं होगा।

प्रश्न 4) उषा की मुस्कान मानव-मन को क्या प्रेरणा देती है?

उत्तर : उषा की मुस्कान मानव-मन को यह प्रेरणा देती है कि संकट, आपदा, दुख-रूपी रात्रि बीत जाएगी। फिर सुख के दिन आएँगे, फिर नव निर्माण होगा।

VASUNDHARAHINDI.COM

(।V)

सूख रही है झील रसवंती

मिट्टी की बची है नरम, साँवली, सहस्रों दुख दरार वाली

अब वो दिन याद आते हैं

इस किनारे से उस किनारे तक अछोर पानी और हवा

पुराने महलों से बातें करता, ढलता

पश्चिम का वर्षा सूर्य

झील तट के कंकाल पेड़ों पर

पछतावा करती बैठी होगी चिड़िया

स्त्रियाँ खिन्नमन घाटों से लौट रही होंगी।

आगे देखने वाले भद्रजन झील की मिट्टी बेचने आएँगे

आएँगे उनके देशी-विदेशी परिजन

शोकाकुल झील-तट वासियों को धीरज देने।

सुना है वहाँ गाँधी की प्रार्थना सभा होगी

आएँगी सुब्बालक्ष्मी मीरा का पद गाने –

"हरि तुम हरो जन की पीर।"

(CBSE 2016)

प्रश्न 1) रसवंती कौन है? वो क्यों सूख गई है?

उत्तर : रसवंती एक झील का नाम है। रसवंती झील इसलिए सूख गई है क्योंकि कुछ स्वार्थी लोगों ने अपने आर्थिक लाभ के लिए इसे खरीद लिया है तथा इसका पानी सुखा दिया है।

प्रश्न 2) पहले उसका सौंदर्य कैसा रहा होगा?

उत्तर : पहले इसका सौंदर्य अनुपम था। इसमें इस किनारे से उस किनारे तक अथाह जल भरा रहता था। इसके जल पर बहने वाली हवा पुराने महलों से बातें करती थी।

प्रश्न 3) पेड़ों को कंकाल क्यों कहा? चिड़ियों को क्या पछतावा है?

उत्तर : पेड़ों को कंकाल इसलिए कहा गया है क्योंकि पेड़ों के पत्ते सूख गए हैं। वो केवल ठूँठ रह गए हैं। चिड़ियों को पछतावा इस बात का है कि ये ठूँठ पेड़ उनके बैठने योग्य नहीं रहे हैं।

प्रश्न 4) भद्रजन कौन हैं? वे सूखी झील से कैसे लाभ कमा लेते हैं?

उत्तर : भद्रजन वो हैं जिन्होंने झील को खरीदा है। ये भद्रजन सूखी झील की मिट्टी को बेचकर लाभ कमा लेंगे।

VASUNDHARAHINDI.COM

(V)

मन-दीपक निष्कंप जलो रे।

सागर के उत्ताल तरंगें

आसमान को छू-छू जाएँ

डोल उठे डगमग भूमंडल

अग्निमुखी ज्वाला बरसाए

धूमकेतु बिजली की द्युति से

धरती का अंतर हिल जाए

फिर भी तुम ज़हरीले फन को

कालजयी बन उसे दलो रे।

कदम-कदम पर पत्थर, काँटे

पैरों को छलनी कर जाएँ

श्रांत-क्लांत करने को आतुर

क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ

मरण गीत आकर गा जाएँ

दिवस-रात आपद-विपदाएँ

फिर भी तुम हिमपात तपन में

बिना आह चुपचाप जलो रे।

(CBSE 2017)

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 1) कविता में किसे संबोधित किया गया है और उसे क्या करने को कहा गया है?

उत्तर : कविता में मन को संबोधित किया गया है। मन से कहा गया है - हे मन रूपी दीपक! तू निरंतर जलता रह। जीवन की बाधाओं से घबरा नहीं।

प्रश्न 2) कालजयी बनकर कैसी बाधाओं का दलन करने के लिए कहा गया है?

उत्तर : कालजयी (मृत्यु पर विजय पाने वाले) बनकर समुद्री तूफान, भूकंप, ज्वालामुखी, धूमकेतु रूपी बाधाओं का दलन करने के लिए कहा गया है।

प्रश्न 3) पत्थर, काँटे किसके प्रतीक हैं? ये क्या कर सकते हैं?

उत्तर : पत्थर, काँटे लक्ष्य के मार्ग में बाधाएँ हैं। पत्थर और काँटे रूपी बाधाएँ लक्ष्य-प्राप्ति में कठिनाई उत्पन्न कर सकते हैं।

प्रश्न 4) धरती का अंतर क्यों हिल जाता है?

उत्तर : समुद्री तूफान, भूकंप, ज्वालामुखी, धूमकेतु आदि से धरती का अंतर हिल जाता है।

VASUNDHARAHINDI.COM

अपठित गद्यांश :- अपठित गद्यांश के द्वारा गद्यांश के अर्थ को समझना चाहिए। कई बार गद्यांश के कई शब्दों का अर्थ समझ नहीं आता। ऐसे में गद्यांश के भाव को समझना ही काफी है। गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना चाहिए।

1. गद्यांश के भाव, विचार, कथ्य, संदेश आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।
2. गद्यांश में आए शब्द विशेष, मुहावरे, प्रतीक, विशेषण, समास आदि का अर्थ पूछा जा सकता है।
3. गद्यांश में आई किसी पंक्ति का वाक्य परिवर्तन करने को कहा जा सकता है।
4. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक पूछा जाएगा।
5. गद्यांश से संबंधित 12 अंक के प्रश्न पूछे जाएँगे।

(I)

मृत्युंजय और संघमित्र की मित्रता पाटलिपुत्र के जन-जन की जानी बात थी। मृत्युंजय जन-जन द्वारा धन्वंतरि की उपाधि से विभूषित वैद्य थे और संघमित्र समस्त उपाधियों से विमुक्त भिक्षु। मृत्युंजय चरक और सुश्रुत को समर्पित थे, तो संघमित्र बुद्ध के संघ और धर्म को। प्रथम का जीवन की संपन्नता और दीर्घायु में विश्वास था, तो द्वितीय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में। दोनों ही दो विपरीत तटों के समान थे, फिर भी उनके मध्य बहने वाली स्नेह-सरिता उन्हें अभिन्न बनाए रखती थी। यह आश्चर्य है, जीवन के उपासक वैद्यराज को उस निर्वाण के लोभी के बिना चैन ही नहीं था, पर यह परम आश्चर्य था कि समस्त लोगों को मलों की तरह त्यागने में विश्वास रखने वाला भिक्षु भी वैद्यराज के मोह में फँसकर अपने निर्वाण को कठिन से कठिनतर बना रहा था।

वैद्यराज अपनी वार्ता में संघमित्र से कहते - निर्वाण (मोक्ष) का अर्थ है - आत्मा की मृत्यु पर विजय। संघमित्र हँस कर कहते - देह द्वारा मृत्यु पर विजय मोक्ष नहीं है। देह तो अपने आप में व्याधि है। तुम देह की व्याधियों को दूर कर के कष्टों से छुटकारा नहीं दिलाते, बल्कि कष्टों के लिए अधिक सुयोग जुटाते हो। देह व्याधि से मुक्ति तो भगवान शरण में है। वैद्यराज ने कहा - मैं तो देह को भगवान के समीप जीते जी बने रहने का माध्यम मानता हूँ। पर दृष्टियों का यह विरोध उनकी मित्रता के मार्ग में बाधक नहीं हुआ। दोनों अपने कोमल हास और मोहक स्वर से अपने-अपने विचार प्रस्तुत करते रहते।

(CBSE 2013)

प्रश्न 1) मृत्युंजय कौन थे? उनकी विचारधारा क्या थी?

उत्तर : मृत्युंजय जन-जन द्वारा "धन्वंतरि" उपाधि से विभूषित वैद्य थे। उनकी विचारधारा थी - जीवन संपन्न और दीर्घायु से युक्त होना चाहिए।

प्रश्न 2) जीवन के प्रति संघमित्र की दृष्टि को समझाइए।

उत्तर : जीवन के प्रति संघमित्र का दृष्टिकोण था - निराकरण और निर्वाण।

प्रश्न 3) मृत्युंजय और संघमित्र को दो विपरीत तट क्यों कहा गया है?

उत्तर : मृत्युंजय जीवन की संपन्नता और दीर्घायु में विश्वास करते थे, जबकि संघमित्र निराकरण और निर्वाण में विश्वास करते थे। क्योंकि दोनों के विचार बिल्कुल अलग थे, इसीलिए इन्हें दो विपरीत तट कहा गया है।

प्रश्न 4) देह के विषय में संघमित्र ने किस बात पर बल दिया है?

उत्तर: संघमित्र का मानना है कि देह व्याधि है। देह की व्याधियों दूर कर के कष्टों से छुटकारा नहीं मिलता, बल्कि कष्ट अधिक बढ़ जाते हैं। देह व्याधि की मुक्ति तो केवल भगवान की शरण में है।

प्रश्न 5) गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : "मित्रता : भिन्नता से प्रभावित नहीं"

प्रश्न 6) समर्पित अथवा विभूषित से उपसर्ग और प्रत्यय अलग करें।

उत्तर : समर्पित : उपसर्ग - सम एवं प्रत्यय - इत

विभूषित : उपसर्ग - वि एवं प्रत्यय - इत

प्रश्न 7) रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए - "प्रथम का जीवन संपन्नता और दीर्घायुष्य में विश्वास था, तो द्वितीय का जीवन के निराकरण और निर्वाण में।"

उत्तर : उपरोक्त वाक्य संयुक्त वाक्य है।

(II)

लोकतंत्र के तीनों पायों - विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका का अपना-अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होते हैं या संविधान के दिशा-निर्देश की अवहेलना होती है तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किंतु आईना तभी उपयोगी होता है, जब उसमें दिखाई देने वाली चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगों ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है।

प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उस के अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? राजनीतिक, दल गत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्म कल्याण के। ऐसे तत्वों से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हैं, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है अन्यथा तो वो अंधकार में जीने को विवश हैं ही।

(CBSE 2014)

प्रश्न 1) गद्यांश को एक उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : "न्यायपालिका" इस गद्यांश का शीर्षक है।

प्रश्न 2) लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाती है और क्यों?

उत्तर : जब विधायिका और कार्यपालिका अपने उद्देश्य के प्रति शिथिल हो जाते हैं या संविधान के दिशा-निर्देशों की अवहेलना होती है, तब न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। जब विधायिका और कार्यपालिका अपना कार्य ठीक से नहीं करते, तब सर्वोच्च न्यायालय जनहितकारी निर्णय लेता है।

प्रश्न 3) आईना दिखाने का क्या तात्पर्य है और न्यायपालिका कैसे आईना दिखाती है?

उत्तर : सही और गलत से परिचय कराना ही आईना दिखाना है। जब विधायिका और कार्यपालिका गलत काम करते हैं, तब न्यायपालिका इससे उन्हें अवगत करवाती है।

प्रश्न 4) भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है?

उत्तर : जब राजनैतिक दल और नेता अपने स्वार्थ या अपने हित की सोचते हैं, तब भ्रष्टाचार का जन्म होता है, क्योंकि ये कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कार्य करते हैं आत्म कल्याण के।

प्रश्न 5) जनता को आशा की किरण कहाँ और क्यों दिखाई देती है?

उत्तर : जब राजनेता और अधिकारी अपने स्वार्थ और हित के लिए, समाज के लिए खतरा बन जाते हैं, तब न्यायपालिका समाज कल्याण के लिए फैसले देती है और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बता देती है। तब जनता को आशा की किरण दिखाई देती है।

प्रश्न 6) उपसर्ग और प्रत्यय अलग करो - विद्रूपता

उत्तर : उपसर्ग - वि, मूल शब्द - रूप, प्रत्यय - ता

प्रश्न 7) सरल वाक्य में बदलिए -

"हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्म कल्याण के।"

उत्तर : हम जनकल्याण की कसमें खाकर आत्म कल्याण के कदम उठाते हैं।

VASUNDHARAHINDI.COM

(III)

जब समाचार पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है, तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराए पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है, तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी, जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी, भंडाफोड़ होने पर, बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी। परंतु लोगों की यह सोच गलत है।

आज के युग में मानव का प्रचार-प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतः विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है, जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उसकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पाद कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। इन दोनों के जोड़ने का काम विज्ञापन करता है। यह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का प्रयत्न करता है।

पुराने समय में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की ज़री का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेज़ी का है। संचार-क्रांति ने जिंदगी को स्पीड दे दी है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही है। इसलिए विज्ञापन मानव-जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

(CBSE 2015)

प्रश्न 1) गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : "विज्ञापनों का महत्त्व" इस गद्यांश का उचित शीर्षक है।

प्रश्न 2) विज्ञापन किसे कहते हैं? यह मानव-जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है?

उत्तर : समाचार पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना ही विज्ञापन है। विज्ञापन मानव-जीवन का अनिवार्य अंग है क्योंकि यह शक्तिशाली माध्यम हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है तथा वस्तुओं की माँग बढ़ाता है।

प्रश्न 3) उत्पादक किसे कहते हैं? उत्पादक-उपभोक्ता संबंधों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर : किसी वस्तु को बनाने वाला व्यक्ति या कंपनी उत्पादक कहलाता है तथा उन वस्तुओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। विज्ञापन उत्पादक व उपभोक्ता को जोड़ने का काम करते हैं।

प्रश्न 4) पुराने समय में विज्ञापन का तरीका क्या था? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है?

उत्तर : पुराने समय में विज्ञापन का तरीका मौखिक था। अगर कोई वस्तु अच्छी होती थी, उसका प्रचार एक दूसरे को कहकर करते थे। आधुनिक समय संचार-क्रांति का समय है, इसलिए विज्ञापन मीडिया के द्वारा दिए जाते हैं।

प्रश्न 5) विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के संदर्भ में क्या विचार हैं?

उत्तर : विज्ञापन के आलोचकों का विचार है कि विज्ञापन निरर्थक होते हैं। यदि कोई वस्तु अच्छी है, वह बिना विज्ञापन के ही लोकप्रिय हो जाती है। अगर कोई वस्तु खराब है, विज्ञापन की सहायता पाकर भी वह टिक नहीं पाती।

प्रश्न 6) उपसर्ग-प्रत्यय पृथक कीजिए - अनिवार्य, वास्तविकता।

उत्तर : अनिवार्य - अ (उपसर्ग)

वास्तविकता - इक + ता (प्रत्यय)

प्रश्न 7) मिश्र वाक्य में बदलिए -"वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है।"

उत्तर : "जो वस्तुओं और सेवाओं को खरीदता है वो उपभोक्ता कहलाता है।"

(IV)

संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं, अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है।

बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े-बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं। पर संवाद की सबसे बड़ी शर्त है कि एक दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें, तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम से कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या?

सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है, जिसमें हम प्रायः अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। हम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। तब दूसरे पक्ष को झुँझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था - "सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है।

लोग तो पेड़-पौधों से, नदी-पर्वतों से, पशु पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सब से पूछा था - "क्या आप ने सीता को देखा?" और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

(CBSE 2016)

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : "संवाद" उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक है।

प्रश्न 2) "संवादहीनता" से क्या तात्पर्य है? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है?

उत्तर : संवादहीनता का तात्पर्य है - इसमें किसी भी प्रकार का संवाद नहीं होता। मौन भागीदारी का अर्थ है - व्यक्ति चाहे बोलता कुछ नहीं, पर वह संवाद का हिस्सा होता है। दूसरे द्वारा कही बात को सुनता है, समझता है और उसका आनंद लेता है।

प्रश्न 3) आशय स्पष्ट कीजिए -
"यह उतावलापन हमें संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँचने देता।"

उत्तर : सुनना एक कला है। अधिकतर लोग इस कला में अकुशल होते हैं। व्यक्ति दूसरे की पूरी बात सुने बिना ही उसकी बात काटने के लिए या अपने सुझाव देने के लिए उतावला हो जाता है और अपना झंडा गाड़ना चाहता है। इसी कारण हम संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँच पाते।

प्रश्न 4) रहीम के कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : रहीम कहते हैं - अपने मन की व्यथा दूसरों को नहीं बतानी चाहिए, क्योंकि दूसरे की व्यथा सुनकर लोग केवल हँसते हैं, उसे बाँटकर कम करने का यत्न कोई नहीं करता।

प्रश्न 5) राम का उदाहरण क्यों दिया गया है?

उत्तर : राम का उदाहरण देकर लेखक समझाना चाहते हैं कि जब संवाद पूरे मनोयोग से किया जाता है, तो पशु-पक्षी, पेड़-पौधे भी हमारे संवाद का प्रतिउत्तर देते हैं। जैसे सीता की सूचना राम को एक पक्षी जटायु ने दी थी।

प्रश्न 6) पेड़-पौधे, नदी-पर्वत, पशु-पक्षी का समास विग्रह करके समास का नाम बताओ।

उत्तर : पेड़ और पौधे, नदी और पर्वत, पशु और पक्षी इन सब में द्वंद्व समास है।

प्रश्न 7) "उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता।" वाक्य का मिश्र वाक्य बनाइए।

उत्तर : क्योंकि उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं, इसलिए यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता।

(V)

दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं, इस बात पर प्रायः बहस होती है। कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अक्सर कार्य में असफलता प्राप्त होती है। वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य खो बैठता है। दबाव को यदि ताकत बना लिया जाए तो न सिर्फ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताकत बना लिया। सुख-दुख, सफलता-असफलता, शांति-क्रोध और क्रिया-कर्म हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है। जोस सिल्वा इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक "यू द हीलर" में लिखते हैं कि मन मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को। इस तरह शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है।

दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करे, तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है। दबाव के समय मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं, जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर हैं, तो हमारी बेहतर इन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती हैं। हमारा दिमाग़ जिस चीज पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है, वह हमें बढ़ती प्रतीत होती है। यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे, तो वे और बड़ी होती महसूस होंगी। अगर अपनी शक्तियों पर हम ध्यान केंद्रित करेंगे, तो वे भी बड़ी महसूस होंगी। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि "जीवन एक आदत है, पर अफसोस! हारना भी आदत ही है।"

प्रश्न 1) दबाव में काम करने के नकारात्मक प्रभाव समझाइए।

उत्तर : कई बार अत्यधिक दबाव में काम करने से व्यक्ति पर नकारात्मक भाव हावी हो जाता है, जिससे उसे असफलता मिलती है तथा वह अपना मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य भी खो देता है।

प्रश्न 2) दबाव हमारी सफलता का कारण कब और कैसे बन सकता है?

उत्तर : जब दबाव को अपनी ताकत बना लिया जाता है, तब केवल सफलता ही प्राप्त नहीं होती, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है। केवल इतना ही नहीं, दबाव में व्यक्ति अगर सकारात्मक होकर काम करे, तो सफलता के नए मापदंड स्थापित कर सकता है।

प्रश्न 3) दबाव में सकारात्मक सोच क्या हो सकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : दबाव में यदि सोच सकारात्मक हो तो व्यक्ति सोचता है कि वह बहुत सौभाग्यशाली है, जो कठिन चुनौती को पूरा करने का उसे अवसर मिला है। वह इस चुनौती से मुक्ति प्राप्त करने का पूर्ण प्रयास करके सफलता प्राप्त करता है।

प्रश्न 4) काम करने की प्रक्रिया में मन, मस्तिष्क और शरीर के संबंध को अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर : सबसे पहले कोई विचार हमारे मन में आता है। मन मस्तिष्क को संदेश देता है और मस्तिष्क शरीर को। इस प्रकार शरीर मन के आदेश का पालन करते हुए काम करता है।

प्रश्न 5) आशय स्पष्ट कीजिए -

"जीतना एक आदत है, पर अफसोस! हारना भी आदत ही है।"

उत्तर : जैसे जीतना आदत है, वैसे ही हारना भी आदत ही है। मन अगर सकारात्मक भाव से युक्त है, तो व्यक्ति चुनौतियों पर विजय प्राप्त करता है। दूसरी तरफ अगर सोच नकारात्मक है, तो असफलता ही हाथ लगती है।

प्रश्न 6) अपनी क्षमताओं को जगाने में, समस्याओं को बड़ा महसूस करने में हमारी सोच की क्या भूमिका है?

उत्तर : हमारी सोच के अनुसार ही हमारा दृष्टिकोण होता है। यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे, तो हमें हमारी समस्या बड़ी होती लगेगी और अगर हम अपनी शक्तियों के बारे में सोचेंगे, तो हमें अपनी शक्तियाँ बड़ी महसूस होगी।

प्रश्न 7) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर : "हार और जीत - सोच के अनुसार" इस गद्यांश के लिए उचित शीर्षक है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM